जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

23 दिसंबर, 2024

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में प्रो. जेफ्री प्लीयर्स द्वारा व्याख्यान "समाजों एवं लोकतंत्रों पर सामाजिक आंदोलनों के परिवर्तनकारी प्रभाव पर प्रकाश डालता है "

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के समाजशास्त्र विभाग ने दिनांक 20 दिसंबर, 2024 को "फॉर ग्लोबल सोशियोलॉजी ऑफ सोशल मूवमेंट्स" शीर्षक से एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध समाजशास्त्रियों और अकादमिक नेताओं ने भाग लिया जिन्होंने वैश्विक स्तर पर समाज एवं लोकतंत्र को आकार देने में सामाजिक आंदोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका पर अपने विचार साझा किए। बीज वक्तव्य अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष प्रो. जेफ्री प्लीयर्स ने दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिजवी थे।

कार्यक्रम की शुरुआत समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्ष प्रो. अजरा आबिदी के परिचय से हुई, जिन्होंने मेहमानों और दर्शकों का स्वागत किया। प्रो. आबिदी ने समकालीन समय में सामाजिक आंदोलनों की गतिशीलता की आलोचनात्मक जांच करने के महत्व पर बल दिया। उनके आरंभिक वक्तव्य ने बाद में होने वाली समृद्ध चर्चाओं हेतु माहौल तैयार किया जिसमें अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए विभाग की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला गया।

मुख्य वक्ता, प्रो. जेफ्री प्लीयर्स ने एक आकर्षक भाषण दिया जिसमें सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन में नैतिक शोध प्रथाओं और नवीन पद्धतियों की आवश्यकता पर बल दिया गया। समाजों और लोकतांत्रिक ढाँचों पर सामाजिक आंदोलनों के परिवर्तनकारी प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए, प्रो. प्लीयर्स ने परिवर्तन की गतिशीलता को बेहतर ढंग से समझने के लिए समाजशास्त्रीय शोध में वैश्विक परिप्रेक्ष्य का आह्वान किया।

समाजशास्त्र क्षेत्र की प्रतिष्ठित हस्ती प्रो. अरविंदर ए. अंसारी ने भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के योगदान और भारत में समाजशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की। उनके संबोधन ने इस बात का अवलोकन प्रदान किया कि किस प्रकार भारतीय समाजशास्त्रियों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस अनुशासन के प्रक्षेप पथ को महत्वपूर्ण आकार दिया है।

विशिष्ट अतिथि प्रो राजेश मिश्रा ने वैश्विक समाजशास्त्रीय डिसकोर्स में भारतीय समाजशास्त्रियों के योगदान के बारे में जानकारी साझा की। उनके विचारों ने 1921 से भारतीय समाजशास्त्र की भूमिका सहित सामाजिक संरचनाओं और आंदोलनों की विश्वव्यापी समझ को समृद्ध करने में भारत की बौद्धिक विरासत के महत्व को रेखांकित किया।

प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिजवी ने समाज और लोकतंत्र के बीच जटिल संबंधों के बारे में चर्चा की। वैश्विक सामाजिक आंदोलनों पर प्रकाश डालते हुए, मुख्य अतिथि ने समाजों को नया रूप देने और लोकतांत्रिक आदर्शों को बढ़ावा देने में उनके गहन प्रभाव पर विचार किया। उन्होंने पश्चिम एशियाई देशों के संदर्भ में सामाजिक आंदोलनों की भूमिका पर भी बल दिया और एक लोकतांत्रिक सामाजिक गठबंधन की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो. मोहम्मद मुस्लिम खान ने सामाजिक आंदोलनों के ऐतिहासिक और समकालीन आयामों पर रोशनी डाली, उनकी विकसित प्रकृति और प्रभाव पर मूल्यवान विचार प्रस्तुत किए। सामाजिक विज्ञान में प्रचलित शोध अंतराल पर उनकी टिप्पणियों ने चर्चा को और अधिक मूल्यवान बना दिया।

व्याख्यान की मेजबानी प्रो. शफीक अहमद ने की जिन्होंने वक्ताओं और उपस्थित लोगों के बीच विचारों और संवाद के निर्बाध प्रवाह को सुनिश्चित करते हुए चर्चाओं को कुशलतापूर्वक संचालित किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के छात्र, संकाय सदस्य एवं शोधकर्ता शामिल हुए।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया